

शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक विशिष्ट व राष्ट्रीय मूल्यों का अंबाला संभाग के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन

शोधकर्त्री : संतोष देवी

शोधनिदेशक : डॉ. शिवकान्त शर्मा,

सिंघानिया विश्वविद्यालय, झुंनझुंनु, राजस्थान की पीएच.डी (शिक्षाशास्त्र)

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन विवरणात्मक प्रकार के अनुसंधान की सर्वेक्षणात्मक विधि द्वारा किया गया था। 50 विद्यार्थियों को यादच्छिक रूप से चयनित करके किया गया था। इसकी सांख्यिकी तकनीकी 2 x 2 x 2 प्रसरण विश्लेषण थी। प्रस्तुत अध्ययन का परिणाम था कि शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक विशिष्ट व राष्ट्रीय मूल्यों का अंबाला संभाग के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन में कोई अन्तर नहीं होता।

मुख्य शब्द : नैतिक मूल्यों, राष्ट्रीय मूल्यों, सामाजिक मूल्यों

प्रस्तावना

शिक्षा जगत् समाज एवं राष्ट्र के उत्कर्ष की आधार षिला है। स्वामी विवेकानंद के षब्दों में मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है। शिक्षा का लक्ष्य ही है चरित्र निर्माण। आज तक के सभी शिक्षाआयोगों ने भी शिक्षामें आध्यात्मिकता को एवं मूल्यों को अनिवार्यता से स्वीकार किया है। महात्मा गाँधी ने शिक्षा के लिए व्यक्तिगत जीवन की पवित्रता को सबसे बड़ी षर्त माना था। कवि रवींद्रनाथ और डॉ. राधाकृष्ण ने भी घोषणा की थी कि आध्यात्मिक पुनरुत्थान के बिना वैज्ञानिक उपलब्धियाँ विनाष का कारण बनेंगी। आज यही संघटित हो रहा है।

मूल्य और आध्यात्म

मूल्य एवं आध्यात्मिकता न सिर्फ मानव सभ्यता के केंद्र है बल्कि मनुष्यों द्वारा निर्मित अपने सभी वैध प्रतिष्ठानों तथा उनके नैतिक दर्षनों के भी केंद्र है। परंपरागत रूप में मूल्यों एवं आध्यात्मिकता को धर्म की एक महत्वपूर्ण कड़ी माना जाता रहा है। मूल्य एवं आध्यात्मिकता को

पारिवारिक इकाई का भी मूल तत्त्व माना जाता है। फिर भी विगत 2500 वर्षों से सभी महान एवं सामान्य सभ्यताएँ मनुष्य की कमियों, कमजोरियों के निवारण को लेकर चिंताग्रस्त रही है। कुछ महान विभूतियों की बात अगर छोड़ दें तो सामूहिक रूप से हम सभी लोग अपने मूल्यों एवं नैतिक सिद्धांतों का पालन नहीं कर पाए। यही कारण है कि लंबे समय से धीरे-धीरे इन मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है और आज भी हम मूल्य ह्रास के दौर से गुजर रहे हैं। वर्तमान परिवेश में पारम्परिक शिक्षाविद्यार्थियों में विषिष्ट मानसिक दक्षताओं और ज्ञान का ही विकास करती है। इससे वे केवल अपनी जीविका कमाने के ही योग्य बनते हैं। वर्तमान समय में प्रतिस्पर्धा इतनी तीव्र हो गई है कि छात्रों के समक्ष उच्च शिक्षाके चयन की मजबूरी रहती है और इसके लिए वे अपने मूल्यों, अपनी संस्कृति, एकता, सत्यनिष्ठा एवं अन्य मानसिक दक्षताओं की बलि देते हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि इन मूल्यों के द्वारा ही जीवन सुखी बनता है। इसके द्वारा ही एक विषिष्ट पुरुष अथवा स्त्री का निर्माण होता है जो सभ्य समाज के नवनिर्माण में गुणात्मक भूमिका का निर्वहन करने के योग्य बनते हैं।

मूल्यों का वर्गीकरण

प्रायः लोग यह सोचते हैं कि सभी मूल्य प्रकृति से नैतिक होते हैं तथा मूल्यों पर आधारित निर्णय का अर्थ के आधार पर निर्णय लेना मानते हैं। वास्तव में अनेक मूल्य ऐसे होते हैं जो नैतिकता से क्षेत्र से बाहर होते हैं, उदाहरणार्थ— बौद्धिक, सौन्दर्यात्मक, राजनीतिक,, वैयक्तिक, आर्थिक, तथा सामाजिक मूल्य। नैतिक मूल्य सही व गलत आचरण के निर्देशक हैं।

साहित्य की समीक्षा

सबिता मिश्रा (2009) ने उड़ीसा के 510 पुरुष व महिला शिक्षक जो ग्रामीण व शहरी थे के मूल्य निर्धारण का अध्ययन किया। इन्होंने पाया कि ग्रामीण व शहरी प्रभावी शिक्षक, सौन्दर्यात्मक मूल्यों में अलग थे जबकि ग्रामीण व शहरी अप्रभावी शिक्षक सैद्धान्तिक, सामाजिक व राजनैतिक मूल्यों में समान थे।

नूका हैथर (2010) ने उच्च शिक्षा में मूल्य शिक्षण के लिए शिक्षक विकास कार्यक्रम की प्रभावशीलता का अध्ययन किया। इन्होंने पाया कि शिक्षक विकास में अच्छी निति निर्माण के कार्यक्रमों की आवश्यकता है। जिससे अच्छे शिक्षकों का निर्माण हो सके।

नरेन्द्र व अन्य (2011) ने अपने अध्ययन में सूचना – संचार तकनीकी के माध्यम से शिक्षक को प्रभावशाली कैसे बनाया जा सकता है, पर पुना के एक विद्यालय में अध्ययन किया। इन्होंने पाया कि अन्तक्रिया को सूचना-संचार तकनीक से बढ़ाया जा सकता है जिसके फलस्वरूप

शिक्षण भी प्रभावशाली हो जायेगा तथा छात्रों में मूल्य भी विकसित किये जा सकेंगे।

ललित मोहन शर्मा व अन्य (2012) ने उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के समायोजन, मानसिक स्वास्थ्य व मूल्यों के पारस्परिक प्रभाव का अध्ययन किया। इन्होंने पाया कि जिन छात्रों व छात्राओं में प्रजातांत्रिक मूल्य व आर्थिक मूल्य ज्यादा है, उनका समायोजन भी अच्छा है।

गोयल सुनीता (2013) शिक्षकों की अभिवृत्ति व्यवसाय संतुष्टि एवं उनके मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन।

1. ग्रामीण शिक्षकों की अभिवृत्ति एवं व्यवसाय संतुष्टि का अध्ययन करना।
2. शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति एवं व्यवसाय संतुष्टि का अध्ययन करना।
3. शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

डॉ॰ नीतू सिंह तोमर ;2016 मानवीय मूल्य वे मानवीय मान, लक्ष्य या आदर्श हैं जिनके आधार पर विभिन्न मानवीय परिस्थितियों तथा विषयों का मूल्यांकन किया जाता है। इन मूल्यों का एक सामाजिक— सांस्कृतिक आधार या पृष्ठभूमि होती है, इसीलिए प्रत्येक समाज के मूल्यों में हमें भिन्नता मिलती है। इन मूल्यों का सामाजिक प्रभाव यह होता है कि हिन्दुओं में विवाह—विच्छेद की भावना पनप नहीं पाती है और विधवा—विवाह को उचित नहीं माना जाता है। सामाजिक मूल्य सामाजिक मान है जो कि सामाजिक जीवन के अन्तः सम्बन्धों को परिभषित करने में सहायक होते हैं।

बुड्स:- ;2017 मूल्य दैनिक जीवन में व्यवहार को नियंत्रित करने के समान्स सिद्धांत है। मूल्य केवल मानव व्यवहार की दिशा निर्धारण ही नहीं करते, बल्कि अपने आप में आदर्श ओर उद्देश्य भी होते हैं।" हमारा साहित्य भले वो किसी भी भाषा में हो उसमें मूल्यों के दर्शन होते हैं। साहित्य और मूल्यों का अटूट रिश्ता है। साहित्य में प्राचीन काल से ही मूल्यों का विवरण हम देखते हैं। मूल्यों का हमेशा आदर होना चाहिए

समस्या कथन

" शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों का अंबाला संभाग के विषिष्ट संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन"

अध्ययन के उद्देश्य

शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों का निम्न के संदर्भ में अध्ययन करना —

(अ) टावास

(ब) परिवारिक

(स) संकाय

(द) महाविद्यालय का प्रकार

अध्ययन के उपकरण

वर्तमान शोध "शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों को अंबाला संभाग के विषिष्ट सदंर्भ में तुलनात्मक अध्ययन" में विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों के जानने के लिए व आंकड़ों के एकत्रिकरण के लिए व आत्म निर्मित प्रज्ञावली/उचित उपकरण का प्रयोग किया जाएगा।

आकडो का विशलेष्ण एवं व्याख्या

1.नैतिक मूल्यों के सदंर्भ में—1. छात्रावास में रहकर शिक्षाप्राप्त करने वाले विद्यार्थियों व गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं होता। 2. विज्ञान एव तकनीकी, कला संकाय व वाणिज्य प्रबंधन के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं होता।

2.राष्ट्रीय मूल्यों के सदंर्भ में—1. छात्रावासी व गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के राष्ट्रीय मूल्यों में कोई अन्तर नहीं होता। 2.विज्ञान एव तकनीकी, कला संकाय व वाणिज्य प्रबंधन के विद्यार्थियों के राष्ट्रीय मूल्यों में कोई अन्तर नहीं होता।

3.सामाजिक मूल्यों के सदंर्भ में—1. छात्रावासी व गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं होता। 2.विज्ञान एव तकनीकी, कला संकाय व वाणिज्य प्रबंधन के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं होता।

भाग – 1 शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों का आवास के सदंर्भ में अध्ययन।

भाग – 2 शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों का पारिवारिक पृष्ठभूमि के सदंर्भ में अध्ययन।

भाग – 3 शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों का संकाय के सदंर्भ में अध्ययन।

भाग – 4 शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों का शिक्षण महाविद्यालयका प्रकार के सदंर्भ में अध्ययन।

भाग – 5 शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों का जाति के सदंर्भ में अध्ययन।

भाग – 6 शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों का क्षेत्र के सदंर्भ में अध्ययन।

भाग – 1 शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों का आवास के सदंर्भ में अध्ययन

शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों के माध्य।

मूल्य	छात्रावासी संख्या 190	गैर छात्रावासी संख्या 410
नैतिक मूल्य	22.3	28.3
सामाजिक मूल्य	32.9	26.3
राष्ट्रीय मूल्य	25.7	29.2

मूल्य मापनी मापदण्ड

मूल्यों का स्तर	नैतिक मूल्य	सामाजिक मूल्य	राष्ट्रीय मूल्य
उच्च	28 से ज्यादा	30 से ज्यादा	29 से ज्यादा
औसत	22 – 28	24 – 30	23 – 29
निम्न	22 से कम	24 से कम	23 से कम

निष्कर्ष— सारणी के अनुसार शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों के नैतिक व राष्ट्रीय मूल्यों के प्राप्तांक क्रमशः 22.3 व 25.7 है जो मूल्य मापनी के मापदण्डानुसार औसत स्तर के हैं। छात्रावास में नहीं रहने वाले विद्यार्थियों के नैतिक व राष्ट्रीय मूल्यों के प्राप्तांक क्रमशः 28.3 व 29.2 है जो मूल्य मापनी के मापदण्डानुसार उच्च स्तर के हैं। शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों का सामाजिक मूल्य उच्च स्तर का है व छात्रावास में नहीं रहने वाले विद्यार्थियों का सामाजिक मूल्य औसत स्तर का है।

भाग – 2 शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों का पारिवारिक पृष्ठभूमि के सदंर्भ में अध्ययन

शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों के माध्य।

मूल्य	संयुक्त परिवार संख्या 220	एकल परिवार संख्या 380	उच्च आय वर्ग संख्या 120	निम्न आय वर्ग संख्या 480
नैतिक मूल्य	29.9	24.3	23.3	27.2
सामाजिक मूल्य	33.3	23.3	26.7	31.3
राष्ट्रीय मूल्य	29.2	24.5	24.1	30.1

मूल्य मापनी मापदण्ड

मूल्यों का स्तर	नैतिक मूल्य	सामाजिक मूल्य	राष्ट्रीय मूल्य
उच्च	28 से ज्यादा	30 से ज्यादा	29 से ज्यादा
औसत	22 – 28	24 – 30	23 – 29
निम्न	22 से कम	24 से कम	23 से कम

निष्कर्ष— मापनी के मापदण्डानुसार सारणी का विश्लेषण करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि संयुक्त परिवार में रहने वाले छात्रों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्य उच्च स्तर के हैं जबकि एकल परिवार में रहने वाले छात्रों के नैतिक व राष्ट्रिय मूल्य तो औसत स्तर के हैं लेकिन सामाजिक मूल्य निम्न स्तर का है। इसी प्रकार उच्च आय वर्ग वाले छात्रों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्य औसत स्तर के हैं तथा निम्न आय वर्ग वाले छात्रों के सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्य तो उच्च स्तर के हैं लेकिन नैतिक मूल्य औसत स्तर का है।

भाग – 3 शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों का संकाय के सदस्यों में अध्ययन

शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों के माध्य।

मूल्य	विज्ञान एव तकनीकी संख्या 200	कला संकाय संख्या 200	वाणिज्य प्रबंधन संख्या 200
नैतिक मूल्य	26.2	29.2	24.6
सामाजिक मूल्य	23.9	32.3	28.1
राष्ट्रीय मूल्य	26.2	30.1	24.1

मूल्य मापनी मापदण्ड

मूल्यों का स्तर	नैतिक मूल्य	सामाजिक मूल्य	राष्ट्रीय मूल्य
उच्च	28 से ज्यादा	30 से ज्यादा	29 से ज्यादा
औसत	22 – 28	24 – 30	23 – 29
निम्न	22 से कम	24 से कम	23 से कम

निष्कर्ष – सारणी के आंकड़ों का मूल्य मापनी के मापदण्डानुसार विप्लेषण करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि विज्ञान एव तकनीकी व वाणिज्य प्रबंधन संकाय के छात्रों के नैतिक मूल्य औसत स्तर के हैं। कला संकाय के छात्रों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्य उच्च स्तर के हैं। विज्ञान एव तकनीकी संकाय के छात्रों के सामाजिक मूल्य निम्न स्तर के हैं। वाणिज्य प्रबंधन संकाय के छात्रों के सामाजिक मूल्य औसत स्तर के हैं। विज्ञान एव तकनीकी तथा वाणिज्य प्रबंधन संकाय के छात्रों के राष्ट्रीय मूल्य औसत स्तर के हैं।

भाग – 4 शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों का शिक्षण महाविद्यालयका प्रकार के सदंर्भ में अध्ययन

शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों के माध्य।

मूल्य	सहायता प्राप्त संख्या 150	राजकीय संख्या 150	निजि संख्या 150	अल्पसंख्यक संख्या 150
नैतिक मूल्य	29.1	25.3	23.7	31.7
सामाजिक मूल्य	30.1	26.1	27.7	34.8
राष्ट्रीय मूल्य	29.2	29.1	25.2	32.0

मूल्य मापनी मापदण्ड

मूल्यों का स्तर	नैतिक मूल्य	सामाजिक मूल्य	राष्ट्रीय मूल्य
उच्च	28 से ज्यादा	30 से ज्यादा	29 से ज्यादा
औसत	22 – 28	24 – 30	23 – 29
निम्न	22 से कम	24 से कम	23 से कम

निष्कर्ष– सारणी के अनुसार सहायता प्राप्त व अल्पसंख्यक शिक्षण महाविद्यालयके छात्रों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्य उच्च स्तर के हैं। राजकीय शिक्षण महाविद्यालयके छात्रों के राष्ट्रीय मूल्य उच्च स्तर के हैं। निजी शिक्षण महाविद्यालयों के छात्रों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्य औसत स्तर के हैं। राजकीय शिक्षण महाविद्यालयके छात्रों के नैतिक व सामाजिक मूल्य औसत स्तर के हैं।

भाग – 5 शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों का जाति के सदंर्भ में अध्ययन

शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों के माध्य।

मूल्य	एससी ए/बी संख्या 100	इ.डब्ल्यू. एस/ ओ.बी.सी संख्या 80	बीसी संख्या 200	सामान्य संख्या 220
नैतिक मूल्य	26.2	24.1	29.2	28.9
सामाजिक मूल्य	24.5	26.2	28.1	27.1
राष्ट्रीय मूल्य	27.1	27.2	30.1	29.5

मूल्य मापनी मापदण्ड

मूल्यों का स्तर	नैतिक मूल्य	सामाजिक मूल्य	राष्ट्रीय मूल्य
उच्च	28 से ज्यादा	30 से ज्यादा	29 से ज्यादा
औसत	22 – 28	24 – 30	23 – 29
निम्न	22 से कम	24 से कम	23 से कम

निष्कर्ष – सारणी के अनुसार बीसी व सामान्य छात्रों के राष्ट्रीय मूल्य उच्च स्तर के हैं। बीसी छात्रों के नैतिक मूल्य भी उच्च स्तर के हैं। एससी ए/बी व इ.डब्ल्यू. एस/ ओ.बी.सी के छात्रों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्य औसत स्तर के हैं। बीसी व सामान्य छात्रों के सामाजिक मूल्य भी औसत स्तर के हैं।

भाग – 6 शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों का क्षेत्र के सदंर्भ में अध्ययन

शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों के माध्य।

मूल्य	शहरी संख्या 300	ग्रामीण संख्या 300
नैतिक मूल्य	23.3	31.1
सामाजिक मूल्य	25.2	30.3
राष्ट्रीय मूल्य	24.5	25.2

मूल्य मापनी मापदण्ड

मूल्यों का स्तर	नैतिक मूल्य	सामाजिक मूल्य	राष्ट्रीय मूल्य
उच्च	28 से ज्यादा	30 से ज्यादा	29 से ज्यादा
औसत	22 – 28	24 – 30	23 – 29
निम्न	22 से कम	24 से कम	23 से कम

निष्कर्ष—शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्य औसत स्तर के हैं। ग्रामीण छात्रों के राष्ट्रीय मूल्य भी औसत स्तर के हैं। शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक व सामाजिक मूल्य उच्च स्तर के हैं।

परिकल्पना 1. राष्ट्रीय मूल्यों के सदंर्भ में –छात्रावासी व गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के राष्ट्रीय मूल्यों में कोई अन्तर नहीं होता।

सारणी के परिणामों का विश्लेषण करने से यह निष्कर्ष निकलता है कि मध्यमानों में अन्तर सार्थक हैं। अतः उपरोक्त परिकल्पना “छात्रावासी व गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के राष्ट्रीय मूल्यों में कोई अन्तर नहीं होता” को निरस्त किया जाता है।

परिकल्पना 2. राष्ट्रीय मूल्यों के सदंर्भ में –विज्ञान एव तकनीकी, कला संकाय व वाणिज्य प्रबंधन संकाय के विद्यार्थियों के राष्ट्रीय मूल्यों में कोई अन्तर नहीं होता।

शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों की विज्ञान एव तकनीकी, कला संकाय तथा वाणिज्य प्रबंधन संकाय के आधार पर तुलना की गयी है। प्रसरण विश्लेषण के परिणामों के सारांश को प्रस्तुत किया गया है। एफ मानों की सारणी से स्पष्ट है कि नैतिक मूल्यों के लिए एफ मान सार्थकता स्तर 0.01 के सारणी मान से अधिक है।

अतः परिकल्पना “विज्ञान एव तकनीकी, कला संकाय व वाणिज्य प्रबंधन संकाय के विद्यार्थियों के राष्ट्रीय मूल्यों में कोई अन्तर नहीं होता” को निरस्त किया जाता है।

परिकल्पना 1. नैतिक मूल्यों के सदंर्भ में – विज्ञान एव तकनीकी, कला संकाय व वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं होता।

शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों की विज्ञान एव तकनीकी, कला संकाय तथा वाणिज्य प्रबंधन संकाय के आधार पर तुलना की गयी है। प्रसरण विश्लेषण के परिणामों के सारांश को प्रस्तुत किया गया है। एफ मानों की सारणी से स्पष्ट है कि नैतिक मूल्यों के लिए एफ मान सार्थकता स्तर 0.01 के सारणी मान से अधिक है।

अतः परिकल्पना “विज्ञान एव तकनीकी, कला संकाय व वाणिज्य प्रबंधन संकाय के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं होता” को निरस्त किया जाता है।

परिकल्पना 2. सामाजिक मूल्यों के सदंर्भ में – छात्रावासी व गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं होता।

शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों के आवास के आधार पर प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन व टी-मान को दर्शाया गया है। उपरोक्त सारणी के परिणामों का विश्लेषण करने से यह निष्कर्ष निकलता है कि मध्यमानों में अन्तर सार्थक हैं। अतः उपरोक्त परिकल्पना “छात्रावासी व गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं होता।” को निरस्त किया जाता है।

परिकल्पना 2. सामाजिक मूल्यों के सदंर्भ में –विज्ञान एव तकनीकी, कला संकाय व वाणिज्य प्रबंधन संकाय के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं होता।

शिक्षण महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों की विज्ञान एव तकनीकी, कला संकाय तथा वाणिज्य प्रबंधन संकाय के आधार पर तुलना की गयी है। प्रसरण विश्लेषण के परिणामों के सारांश को प्रस्तुत किया गया है। एफ मानों की सारणी से स्पष्ट है कि नैतिक मूल्यों के लिए एफ मान सार्थकता स्तर 0.01 के सारणी मान से अधिक है।

अतः परिकल्पना “विज्ञान एव तकनीकी, कला संकाय व वाणिज्य प्रबंधन संकाय के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं होता” को निरस्त किया जाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- [1]. **Adler, A. (1998)**, The practice and theory of individual psychology. New York: Harcourt Brace Jovanovich.
- [2]. **Agarwal, Rashmi (1997)**, “Revitalizing Teacher Education”, New Delhi, Univ. News; Jan-2.
- [3]. **Bawa, M.S., (2001)**, “Professional Development of Teachers through modelling”, New Delhi, Univ. News, 39(32).
- [4]. **Bennett, Neville (2007)**, Teaching and teacher Education, Oxford, pergamon.
- [5]. **Best, J.W. (2003)**, Research in Education, New Delhi, prentice Hall of India Pvt. Ltd.
- [6]. **Best, J.W. and Kahn, J.V. (2002)**, Research in Education, New Delhi, Prentice Hall.
- [7]. **Bhargave, Mahesh (2004)**, Modern psychological Testing and Measurement, Agra, Har Prasad Bhargava.
- [8]. **Chauhan Poonam, (2001)**, “Restructuring of Teacher Education for quality improvement”, Univ. News,39(53), Dec.31.
- [9]. **Chauhan C.P.S., (2001)**, “Revitalizing Teacher Education”, New Delhi, Univ. News, 39(32).
- [10]. **Clark, B. (2003)**. Growing up gifted (3rd ed.) Columbus, OH: Merrill.
- [11]. **Covington, M.(2007)** “Self-Esteem and failure in School.” The Social importance of Self-Esteem. U.C.
- [12]. **Das, B.C. (2010)**, “A Model Approach to Teacher Training programme.” Univ. News, 37(22).
- [13]. **Davis, Eddie. (2010)** “Youth Violence: An Action Research Project.” Journal of Multicultural S Social Work v1 n3 p. 33-44.